श्रीअरविन्द



मृतकोंका वार्त्तालाप



श्रीअरविन्द



मृतकोंका वार्त्तालाप

श्रीअरविंद आश्रम
पांडिचेरी



प्रकाशक

श्रीअरविन्द आश्रम, पांडिचेरी



प्रथम संस्करण....५ अक्तूबर १९५४

श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी

594/54/8/1000

विषय-सूची

[ये वार्त्तालाप सन् १९०९ और १९१० के बीच 'कर्मयोगिन्' पत्रके लिये लिखे गये थे। अंतिम वार्त्तालापके अतिरिक्त बाकी सभी उस पत्रमें प्रकाशित हुए थे।]

मृतकोंका वार्त्तालाप

१

दीनशाह, परीजादी

(१)

दीनशाह

परीजादी, ईरानके कुंज हमारे मजिन्दरान शहरके इन कुंजों जैसे शीतल और मधुर नहीं थे। यहां शांतिकी सरिताके तट-पर लहलहाते हुए बागोंमें कहीं अधिक सुंदर और सुगंधित फूलोंकी चादर बिछी हुई है, यहां प्रत्येक वृक्षपर जो पक्षिगण गान करते हैं और अपनी कलरवमय स्वरसंगतिके अपार्थिव आनंदके द्वारा दिनको संगीतमय बनाते हैं, उनके पंख और रंग इतने विभिन्न प्रकारके हैं कि उनकी कोमलता और शोभासे ही आंखें तृप्त हो जाती हैं, उनके नाम और जाति जाननेकी इच्छा ही नहीं होती। यहां दो हजार वर्षोंसे हम देवदूतोंकी आनंद-सुधा पान कर रहे हैं, पर न जानें क्यों, मुझे ऐसा लगता है कि ईरानकी स्मृतियां मेरे दिलमें वापस आ रही हैं। जिहूनका जल और तातारोंके खीमे जहां अफ्रासियाबके दल घूमते हैं, समृद्धिशाली दमस्कस और हमारे

अपने शहर, जहां हम दोनोंके माता-पिताके मकान पास-पास थे और हम दोनों छज्जेपरसे झुककर मन्द-मधुर स्वरमें बातें किया करते थे,—मुझे फिर उनकी चाह उठती मालूम होती है।

परीजादी

अपने पुराने स्थानोंमें लौटनेमें मुझे भी आपत्ति नहीं होगी। यह बात नहीं कि मैं मजिन्दरानसे ऊब गयी हूं, पर कोई चीज फिर मुझे उसका उपभोग करनेके लिये बुला रही है जो मर्त्य और क्षणिक होता है, पर जिसमें शीघ्र छीन लिये हुए और परिपूर्ण आनंदका तीखा भाव रहता है। फिर भी, दीनशाह, दो हजार वर्ष बीत चुके हैं; जिन स्थानोंको हम प्यार किया करते थे वहां जानेसे पहले क्या हमें यह नहीं सोच लेना चाहिये कि वहांकी अब क्या दशा है? हो सकता है कि अब वहां अन्य लोग आ गये हों, अन्य भाषाएं बोली जाती हों, अन्य रीति-नीतियोंका अधिकार हो गया हो, और हम अपरिचितोंकी भांति एक ऐसे जगत्में पहुंचें जिसके साथ अब हमारा मेल न बैठता हो।

दीनशाह

मैं जाकर देखूंगा। तुम मेरी प्रतीक्षा करो, परीजादी!

(२)

दीनशाह

परीजादी, परीजादी, हम पृथ्वीपर वापस नहीं जायंगे, बल्कि

हमेशा मजिन्दरानमें ही रहेंगे। मैं पृथ्वीको देख आया हूं, वह अब बदल गयी है। तुम कितनी बुद्धिमती हो, मेरी देवी!

परीजादी

तुमने क्या देखा या सुना, प्रियतम?

दीनशाह

मैंने एक ऐसा जगत् देखा जो सौंदर्यसे रहित था। वहांकी इमारतें या तो भद्दी और हीन कोटिकी थीं, या उनमें आडंबर और झूठा सौंदर्य भरनेकी कोशिश की गयी थी। मीलों ईंटोंकी कतारें हैं, कहीं-कहीं मुश्किलसे थोड़ी-सी हरियाली दिखायी देती है, बस ये हैं वहांके शहर। इन शहरोंसे बराबर ही उठता रहता है एक कर्कश कोलाहल, भट्ठियोंकी ज्वाला और धातुओंकी झनझनाहट; घना, गंदा धुआं आकाशमें छाया रहता है; वहांके बाग जले हुए हैं और उनमें कोई सौंदर्य नहीं है। वहां-के मनुष्य भयावह पोशाक पहनते हैं जो उनके उदास चेहरों और बेडौल अंगोंसे भी अधिक भद्दी होती है। वह तो जंगलियोंका जगत् हो गया है; सूरजकी रोशनीमें काम करनेके लिये मानो पातालसे भूत-पिशाच निकल आये हों।

परीजादी

दीनशाह, यह तो दुःखदायी खबर है, क्योंकि जाना तो हमें होगा ही। क्या तुम नहीं जानते कि हमारे दिलमें जो यह चाह उठ रही है वह इसीका संकेत है?

दीनशाह

हां, मेरी परीजादी, पर हमारे हृदयोंने हमें उस भयावनी जगहमें नहीं, बल्कि ईरानके प्रासादों और उपवनोंमें जानेके लिये प्रेरित किया था।

परीजादी

पर, दीनशाह, हो सकता है कि, संसार पहले जैसा था फिर वैसा ही––सौंदर्य, संगीत और आनंदका धाम––बनानेके लिये हम वहां जायं। जिस जगत्का वर्णन तुमने किया है उसमें यदि हम प्रवेश करें तो निश्चय ही हम उसे वैसा ही नहीं रहने देंगे; जबतक हम उसे अपनी इच्छाके अनुसार बिलकुल बदल न डालें तबतक हमें संतोष न होगा।

दीनशाह

मुझे भी लगता है कि तुम ठीक कहती हो परीजादी! तुम्हारी बात बराबर ही ठीक होती है। तो फिर हम उठें और चलें।

२

तूरियु, ऊरियु

तूरियु

स्वर्गलोकसे उतरती हुई देवी लेडा, उषःकालकी स्वर्णिम आभा बिखेरते हुए तेरे चरण कितने सुंदर दिखायी देते हैं! पृथ्वीके गुलाब लाल हैं, पर तेरे चरण जिस सिंदूरी स्पर्श से स्वर्गको रंजित करते हैं वह और भी अधिक लाल है,—वह है प्रेमकी लालिमा, अनुरागकी श्रीशोभा।

देवी लेडा, करुणाभरी आंखोंसे मनुष्योंकी ओर देख। युद्धका निनाद शांत हो गया है, तीरोंकी सनसनाहट बंद हो गयी है, भीषण आक्रमणके जोशमें अब ढालें एक-दूसरीके साथ नहीं टकरातीं। अपनी तलवारोंको हमने अपने मकानकी दीवालोंपर लटका दिया है। युवकगण अनाहत लौट आये हैं; एसिलोनकी युवतियां खेतोंमें मधुर और उच्च स्वरमें अपने प्रेमियोंके हृदयोंका आह्वान कर रही हैं।

देवी लेडा, हंसीकी देवी, आनंदकी देवी! तू आ प्रेमके कक्षोंमें, विवाहके गीतोंमें, तू आ बागोंमें और सुहावने झरनोंके तटपर जहां लड़के और लड़कियां एक-दूसरेकी आंखोंमें आंख गड़ाकर देखते हैं, तू आ और धीमे स्वरमें हृदयसे बातें कर। घृणाको दूर कर, क्रोधको निकाल फेंक। प्रेम इस जगत्का आलिंगन करे और संघर्षके लिये उत्सुक आत्माको चुंबनोंसे शांत कर दे।

ऊरियु

तूरियुका गान सुन्दर है, पर ऊरियुका मंत्रोच्चार शक्तिशाली है। टेनिथका मंत्र सुनो।

टेनिथ, भयंकरी मां! कपालोंकी मालासे शोभित, मृत्युकी चीखसे भरी वेदीपर अपने शिकारोंका रक्त पीनेवाली शक्ति-शालिनी और निर्मम मां!

टेनिथ, तू युद्धके आवेशके अंदर रहती है, तेरा भीषण निनाद बहुत ऊपर उठता है और रथोंकी घरघराहट और युद्धकी तुमुल ध्वनिको डुबा देता है; तू, रक्त-रंजित, उत्सुक और भयावह, निर्मम, विराट् और क्षिप्र है; तू अद्भुत है पूज्या माता!

मेरी बात सुन! मैं, जो तुझसे डरता नहीं, मैं जो तुझसे प्रेम करता हूं, तुझसे पूछता हूं: क्या तू थक गयी है? क्या तू शत्रुके रक्त और शिकारके मांससे तृप्त हो गयी है? भला शक्तिमानोंकी भूमि एसिलोनमें युद्धका वज्रनिर्घोष शांतिमें, विश्रांति-में क्यों डूब गया है?

मैं नहीं थका हूं, मैं नहीं तृप्त हुआ हूं। मैं तेरा आह्वान करता हूं, तू जाग और मुझे फिरसे हत्याका आनंद दे; अहंकारसे फूली हुई और जयध्वनि करनेवाली सेनाओंको तीरोंसे तितर-बितर करते हुए मैं भूपतित शत्रुके मुखमंडलको पददलित करूं, यह भूल जाऊं कि ऊरियुने अग्रभागमें रहकर युद्ध किया था।

मां, उठ! लेडाके लिये छोड़ दे उसके उद्यान और रमणीक भवन, एसिलोनके बालकोंके सुन्दर और स्निग्ध मुखमंडल और स्त्रियोंका आनंददायी सौंदर्य। मैं मंत्रणा-गृह और संग्राममें ही

बूढ़ा हुआ हूं, मेरे बाल सफेद हुए हैं। लेडाके पास मेरे लिये कुछ भी नहीं; मैं भला उसका शांतिका वरदान और प्रेम और सौंदर्यकी प्रेरणा लेकर क्या करूंगा?

मां, उठ! हे भयावनी टेनिथ! तू अपने फुफकारसे जगत्को हिला दे, तू स्वर्गमें छा जा, मनुष्योंके हृदयको रक्तकी पिपासा-से पागल बना दे, मृत्युके आनंद और हत्याके हर्षसे उन्मत्त बना दे। हम तुझे मनचाहे बंदी देंगे, तेरी वेदीपर स्त्रियों और पुरुषों-की बलि चढ़ायेंगे।

टेनिथ, मृत्युकी देवी, युद्धकी रानी! मृत्युके संघर्षमें भी एक सुख है जो स्त्रीके मधुर आलिंगनके सुखसे भी बड़ा है, पीड़ामें भी एक सुख है जिसे स्त्रीके होठोंका स्पर्श नहीं दे सकता; भालोंसे बिंधा हुआ शरीर स्त्रीके चमकीले हीरोंसे सज्जित गौर अंगोंसे बहुत अधिक सुन्दर लगता है। टेनिथकी मुंडमाल तेरे वक्षस्थलपर पड़ी पुष्पमालसे कहीं बढ़कर है, हे लेडा!

तूरियु

युद्ध और गीतमें दक्ष हे ऊरियु, तुम्हारा यह गान महान् है, पर मेरा भी सुन्दर है। एसिलोनके मंदिरों और बाजारोंमें मिले हमें बहुत दिन हो गये हैं। युग-युग बीत चुके हैं और पृथ्वी भी बदल गयी है, हे आसाके राजकुमार!

ऊरियु

मैं महान् वीरोंके स्वर्गमें रह चुका हूं जहां हम सारे दिन लड़ते और शामको भोजमें एकत्र होते हैं।

तूरियु

और मैं प्रेम और संगीतके उपवनोंमें रह चुका हूं, जहां फूलोंसे शोभित तटपर समुद्र मंद गतिसे लहराता है। किंतु अब समय आ रहा है जब मुझे नीचे उतरना ही होगा और मर्त्य सुखके स्थानोंमें फिरसे संगीत और मधुरिमाका स्रोत बहाना होगा।

ऊरियु

मैं भी नीचे उतरूंगा, क्योंकि योद्धाकी भी आवश्यकता है, केवल कवि और प्रेमीकी ही नहीं।

तूरियु

जगत् बदल गया है, हे आसाके राजकुमार ऊरियु! अब तुम्हें हत्या और निर्दयताका आनंद नहीं मिलेगा। मनुष्य अब सदय हो गये हैं, उनमें कोमलता और सुकुमारता भर गयी है।

ऊरियु

मैं नहीं जानता। टेनिथ जो कुछ मुझे करनेको देगी वही मैं करूंगा। यदि उसकी बनायी दुनियांमें निर्दयता न हो, भयानकता न हो तो फिर मेरी पुकार नहीं होनी चाहिये।

तूरियु

हम एक साथ नीचे उतरेंगे और देखेंगे कि जिस जगत्में करोड़ों वर्ष बाद हमारी मांग हो रही है, वह आखिर कैसा है।

३

मैजिनी, शेवूर, गेरिबाल्डी

मैजिनी

आज इटलीकी अवस्था इस बातका प्रमाण है कि मेरी शिक्षाकी आवश्यकता थी। मेचियावेलिका सिद्धांत शेवूरकी नीतिमें फिर उठ खड़ा हुआ और अपने प्रयत्नोंके शीघ्रतासे आते हुए फलोंको अत्यधिक आतुरताके साथ ग्रहण करनेके कारण इटली उस स्पष्ट ज्ञानको खो बैठी जो मैंने उसे दिया था। इसीलिये अब वह कष्ट भोग रही है। हमें फलके लिये काम तो करना चाहिये पर फलके प्रति हमें इतनी आसक्ति नहीं होनी चाहिये कि उसे जल्दीसे पानेके लिये हम अपने सच्चे साधनोंका बलिदान कर डालें, क्योंकि ऐसा करनेसे अंतमें हम अपने सच्चे लक्ष्यका ही बलिदान कर बैठते हैं।

शेवूर

इटलीकी अवस्था इस बातका प्रमाण है कि मेरी नीति कितनी पक्की थी। मैजिनी, तुम अभी भी आदर्शवादीकी भांति, धारणाओंसे बने मनुष्यकी भांति बातें करते हो। राजनीतिज्ञ आदर्शोंको मानता है, पर धारणाओंसे उसका कोई सरोकार नहीं होता। वह सदैव अपने प्रधान लक्ष्यबिंदुपर चोट करता है और

इसके लिये ब्योरोंकी बहुतसी चीजोंका बलिदान करनेको तैयार रहता है।

मैजिनी

तुम्हारा कहना ठीक है, पर यहां बलिदान ब्योरोंका नहीं, बल्कि मूल बातका ही हो गया है।

शेवूर

इटली एक है, इटली स्वतंत्र है।

गेरिबाल्डी

एकता मैंने स्थापित की थी। मैंने न तो मेचियावेलिके सिद्धांतका व्यवहार किया और न मैंने राजनीति या शासन-नीति-पर ही भरोसा किया। मैंने अपने देशको छिन्न-भिन्न करके स्वतंत्रता नहीं खरीदी। बल्कि मैंने तो राष्ट्रकी आत्माका आवाहन किया और वह जगी और वह महान् आततायियों और तुच्छताके जुएको स्वयं दूर फेंक मुक्त हो उठी। शेवूरको तो भरोसा करना चाहिये था इटलीकी आत्माकी वीरता और राजोचित गुणों-पर, प्राचीन रोमनों, एट्रूसकनों और सेमाइटोंके फ्लोरेन्स, रोम और नेपुल्सके पुनर्जागरणपर, न कि राष्ट्रों और छोटे-छोटे राज्यों-के उस झूठे सौदागर लुई नेपोलियनपर।

मैजिनी

इटली एक है, इटली स्वतंत्र है, परंतु केवल शरीरमें, आत्मामें

नहीं। गेरिबाल्डी, तुमने एकताबद्ध इटली एक आदमीको दे दी, राष्ट्रको नहीं दी।

गेरिबाल्डी

मैंने इटली दे डाली उसके प्रतिनिधिको, उसके राजा और वीर पुरुषको। मैं अभी भी यह नहीं समझता कि मैंने बुरा किया। राष्ट्रने कहा, "वह हमारा प्रतिनिधि है", और प्रजातंत्र-वादी होनेके नाते मैंने राष्ट्रकी आवाजके आगे सिर झुकाया।

शेवूर

वह तुम्हारे जीवनका सर्वश्रेष्ठ अनुप्रेरित कार्य था। यदि अभी भी हल करनेको समस्याएं बाकी हैं, यदि अभी भी समस्त राष्ट्रतंत्रके अंग रोगग्रस्त हैं, तो इनकी तो हमें आशा करनी ही चाहिये थी। केवल एक स्वप्नद्रष्टा ही इतनी लंबी और क्षयकारी बीमारीके बाद शीघ्र स्वास्थ्य-लाभकी मांग कर सकता है। 'सर्जन' का काम (चीरफाड़) हमने कर दिया था, अब शांतिके साथ और बिना दिखावेके चिकित्सकका काम (औषधोपचार) किया जा रहा है।

मैजिनी

इटलीने अपना निर्दिष्ट काम अभी पूरा नहीं किया है। जब मैं उसे देखता हूं तो मेरा हृदय दुःखसे भर जाता है। जिस इटलीको मैंने दुनियाका नेतृत्व करनेकी शिक्षा दी होती वही अब महज एक क्षुद्र राष्ट्र रह गयी है और स्वार्थी तथा बेईमान ट्यू-

टनोंका सहारा खोज रही है। जिस इटलीको नये सिरेसे अपने शासनतंत्र और समाजको एक ऐसे सांचेमें ढालना चाहिये था जो स्वाधीनताके युगकी भावनाओंके उपयुक्त हो, वही आलसी बनकर गौल और सैक्सन जातियोंके पीछे-पीछे पैर घसीट रही है। जिस इटलीको एक नवीन यूरोपीय संस्कृतिका उद्गम होना चाहिये था वही मानवजातिके नेताओंके बीच स्थान पानेमें असमर्थ है। आज अर्द्ध-एशियाई मस्कोवाइट लोग रोमनोंके वंशजोंकी अपेक्षा कहीं अधिक मानवजातिके लिये कार्य कर रहे हैं।

शेवूर

राजनीतिज्ञको धैर्य रखना चाहिये, अपने लक्ष्यकी ओर जानेके लिये चुपचाप काम करना चाहिये, और जैसे-जैसे आगे बढ़े वैसे-वैसे प्रत्येक पगको सुदृढ़ बनाते जाना चाहिये। जब इटलीके आर्थिक कष्टोंका निराकरण हो गया है और चर्च प्रगतिमें अब बाधा नहीं डालता, तब मैजिनीका आदर्श पूरा हो सकता है। इटलीका मस्तिष्क और कृपाण फिर भी नेतृत्व कर सकते हैं और प्राचीन कालकी भांति यूरोपको गढ़ सकते हैं।

मैजिनी

परंतु कोई कूटनीतिज्ञ और समयका दास उस महान् परिणतिको नहीं ला सकता, बल्कि वह वीर आत्मा और शक्तिशाली मस्तिष्क ला सकता है जो कालको परिचालित करता और सुअवसरकी सृष्टि करता है। मैंने इटलीको रोमन ढांचेमें ढालनेकी चेष्टा की थी। मैं जानता था कि यूरोपको अब तीसरे

इलहामकी आवश्यकता है और उसका भगवन्निर्दिष्ट माध्यम है इटली। यही बात मुझे उस समय बतायी गयी थी जब कि पूर्वपुरुषोंकी इस दुनियासे मनुष्योंके अंदर फिरसे जन्म लेनेके लिये मैं नीचे उतरा था। "इटलीने दो बार यूरोपको नई सभ्यता दी है, अब तीसरी बार भी वही उसे देगा।" जब हम नीचे भेजे जाते हैं तब जो वाणी सुनायी देती है वह झूठी नहीं होती।

शेवूर

ठीक है, पर फल सब समय तुरत ही नहीं प्राप्त होता। कभी-कभी लंबी तैयारीका काल आता है, धीमे पवित्रीकरणका दुःखदायी काल आता है, और निर्दिष्ट वस्तु एक निष्फल स्वप्न-जैसी प्रतीत होती है। हमें यह जानते हुए कार्य करना होगा कि फल अवश्य आयगा, उसके आनेमें देर होनेपर न तो हमें अधीर होना होगा न दुःखी और न निराश। यह संभव है कि उस परिणतिको ले आनेके लिये हमें फिरसे बुलाया जाय। हमने सर्वदा ही इटलीकी सहायता की है; एक बार फिर हम उसकी सहायता करेंगे।

मैजिनी

मैं नहीं जानता, पर इस सुखी लोगोंकी दुनियामें मेरे लिये दिन बड़े लंबे होने लगे हैं। अब हमारी बुलाहट आये, मैं प्रार्थना करता हूं कि वह विजय पानेके लिये हो, कूटनीतिके द्वारा नहीं वरन् सत्य और प्रदीप्त साहस के द्वारा....।

गेरिबाल्डी

मोल-तोलके द्वारा नहीं बल्कि वीरकी तलवारके द्वारा...।

मैजिनी

राजकौशलके द्वारा नहीं वरन् मानव-प्रेम और महत् ज्ञानके द्वारा।

शेवूर

मैं संतुष्ट रहूंगा ताकि इटली विजयी हो।

गेरिबाल्डी

अबिसीनियाने इटलीके हाथोंसे जिस तलवारको काट गिराया था वही तलवार जब फिर उठाई जायगी तब मैं उसे उठानेके लिये वहां मौजूद रहूंगा।

४

शिवाजी, जयसिंह

जयसिंह

हम दोनोंमेंसे किसीकी भी जीत नहीं हुई। एक तीसरी ही शक्ति देशमें घुस आयी है और तुम्हारे कार्यका फल भोग रही है और जहांतक मेरे कार्यकी बात है, वह छिन्न-भिन्न हो गया है और मेरा प्रिय आदर्श मिट्टीमें मिल गया है।

शिवाजी

फलके लिये मैंने कार्य नहीं किया था और विफलतासे भी मैं न तो आश्चर्यान्वित हो रहा हूं और न निरुत्साहित।

जयसिंह

मैंने भी स्वयं पुरस्कार पानेके लिये नहीं, बल्कि राजपूतोंके आदर्शको ऊंचा उठाये रखनेके लिये कार्य किया था। सम्मानपूर्ण युद्धमें अडिग साहस, मित्र और शत्रुके प्रति वीरोचित भाव, अपने चुने हुए सम्राट्के प्रति महान् निष्ठा यही मुझे सच्ची भारतीय परंपरा जान पड़ी, यह चीज मुझे हिन्दू जातियोंकी एकता और प्रधानतासे भी अधिक आवश्यक जान पड़ी। इसीलिये मैं तुम्हारे प्रस्तावोंको स्वीकार न कर सका। पर मैंने अपनी परंपराको

स्वीकार करनेके लिये तुम्हें अवसर दिया और जब मेरे साथ और तुम्हारे साथ विश्वासघात किया गया तो मैंने अपने सम्मानकी रक्षा की और तुम्हें भाग निकलनेमें सहायता दी।

शिवाजी

ईश्वरने मुझपर अपनी छत्रछाया फैलायी और मुझे प्रेम और सहायता देनेके लिये एक स्त्रीका हृदय पिघला दिया। परंपराएं बदलती रहती हैं। राजपूतोंके आदर्शका भविष्य महान् है, पर इसके सांचेको तोड़ना आवश्यक था ताकि उसके अंदरकी अस्थायी चीजें दूर हो जायं। अपने चुने हुए सम्राट्के प्रति निष्ठा अच्छी चीज है, किंतु अपने राष्ट्रद्वारा चुने हुए सम्राट्के प्रति निष्ठा उससे भी अच्छी है। राजा भगवत्स्वरूप होता है अपने अंदर अभिव्यक्त भगवान्की शक्तिके कारण, परंतु उसमें यह शक्ति इस कारण आती है कि वह प्रजाका चुना हुआ होता है। राष्ट्रके अंदर विराजमान भगवान्का ही सेवक राजा होता है। मराठोंके विराट् बिठोवा, भारतरूपमें अवतरित भवानीकी शक्तिसे ही मैंने विजय पायी।

जयसिंह

तुम्हारा राजनीतिक आदर्श महान् था, पर तुम्हारे साधनका मानदंड हमारी नैतिकताके लिये घृणित था। छल-कपट, विश्वासघात, लूट-पाट, मार-काट—ये सब चीजें तुम्हारे कार्य-क्षेत्रसे बाहर नहीं थीं।

शिवाजी

मैंने अपने लिये नहीं, वरन् ईश्वरके लिये और महाराष्ट्र-धर्मके लिये, रामदासद्वारा घोषित हिन्दू-जातिके धर्मके लिये युद्ध किया और शासन किया। मैंने अपना मस्तक भवानीको अर्पित किया और उन्होंने मुझे राष्ट्रकी भलाईके लिये योजना बनाने और युक्ति ढूंढ़ निकालनेके लिये उसे रखनेकी आज्ञा दी। मैंने अपना राज्य रामदासको दे डाला और उन्होंने मुझे ईश्वर और मराठोंके दासके रूपमें उसे वापस लेनेके लिये कहा। मैंने दोनों आज्ञाएं शिरोधार्य कीं। मैंने हत्या की जब ईश्वरने आज्ञा दी; मैंने लूटपाट की क्योंकि अपने दिये हुए साधनके रूपमें उसीकी ओर उन्होंने संकेत किया। विश्वासघाती मैं नहीं था, मैंने तो सामग्री और मनुष्योंकी कमीको छल-छद्म और कौशलसे पूरा किया, शारीरिक शक्तिको बुद्धिकी तीक्ष्णता और मस्तिष्ककी शक्तिके द्वारा हराया। दुनियाने युद्ध और राजनीतिमें छलको स्थान दिया है, और राजपूतोंकी वीरतापूर्ण स्पष्ट नीति न तो यूरोपके राष्ट्रोंमें पायी जाती है और न एशियाके।

जयसिंह

मैंने धर्मको सबसे ऊपर रखा और भगवान्‌की वाणी भी मुझ-से उसका त्याग नहीं करा सकी।

शिवाजी

मैंने सब कुछ भगवान्‌को दे डाला और धर्मतकको भी मैंने

नहीं रखा। भगवान्‌की इच्छा ही मेरा धर्म थी क्योंकि वही मेरे नायक थे और मैं उनका सिपाही। यही मेरी निष्ठा थी, औरंगजेबके प्रति नहीं, किसी नीति-शास्त्रके प्रति नहीं, वरन् भगवान्‌के प्रति जिन्होंने मुझे पृथ्वीपर भेजा था।

जयसिंह

वही हम सबको भेजते हैं, पर भिन्न-भिन्न कार्योंके लिये, और कार्यके अनुसार ही वह आदर्श और चरित्रका निर्माण करते हैं। मुझे इस बातका दुःख नहीं कि मुगलोंका पतन हो गया। यदि वे अपना प्रभुत्व बनाये रखनेके योग्य होते तो वे उसे खो न बैठते; पर जब वे योग्य नहीं रहे तब भी मैं उनका विश्वास-पात्र, सेवक और भक्त बना रहा। अपने सम्राट्‌की इच्छाका विरोध करना मेरा काम नहीं था। जिस भगवान्‌ने उन्हें नियुक्त किया था वही उनका विचार करते; वह कार्य मेरा नहीं था।

शिवाजी

भगवान् उस व्यक्तिको भी नियुक्त करते हैं जो विद्रोह करता है और नतमस्तक होकर अन्यायके शासनको बने रहने नहीं देता। भगवान् हमेशा शक्तिमानोंके पक्षमें नहीं रहते; कभी-कभी वह उद्धारकर्ताके रूपमें भी प्रकट होते हैं।

जयसिंह

तब, जैसा कि उन्होंने वचन दिया है, वह स्वयं नीचे उतर आवें। केवल तभी विद्रोहको ठीक माना जा सकेगा।

शिवाजी

किंतु वह भला आयेंगे कहांसे, जब कि वह पहलेसे ही हमारे हृदयोंमें विराजमान हैं? मैंने उन्हें अपने हृदयके अंदर देखा था, इसी कारण अपना कार्य करनेके लिये मैं यथेष्ट शक्तिशाली था।

जयसिंह

किंतु तुम्हारे कार्यपर उनके दिये हुए अधिकारका चिह्न, उनकी मुहर कहां है?

शिवाजी

मैंने एक साम्राज्यकी नींव खोद डाली और वह दुबारा स्थापित नहीं हुआ है। मैंने एक राष्ट्रकी सृष्टि की और वह अबतक नष्ट नहीं हुआ है।

५

लिटिलटन, पर्सिवाल

लिटिलटन

बहुत लंबे समयके बाद, पर्सिवाल, हम लोग मिल रहे हैं। यह आश्चर्यकी बात है कि पृथ्वीपर तो हमारे पथ इतने समानांतर और परस्पर-संबद्ध थे और इस परलोकमें वे एक-दूसरेसे इतने अलग हैं।

पर्सिवाल

यह तुम्हें विचित्र क्यों मालूम हो रहा है, लिटिलटन? हम जिस जगत्‌में अभी हैं वह, जैसा कि हम दोनोंने देख लिया है, हमारे पार्थिव स्वप्नोंके मूल सत्त्व और हमारे मर्त्य स्वभावके ताने-बानेसे ही बना है। स्थूल रूपमें पृथ्वीपर हमारे पथ समानांतर थे। हम कंबरलैंड के पहाड़ोंपर एक साथ घूमते थे या कार्नवाल-की चट्टानोंपर समूचे समुद्रको भीषण रूपमें उछलते और टकराते हुए देखा करते थे। आईसिसमें एक ही नावमें तुम डांड़ चलाया करते और मैं पतवार थामा करता। कालेजमें बराबर ही हमारा एक समान मान था और ट्रिपोसमें हमें एक ही विषयमें एक ही श्रेणी प्राप्त हुई थी। बादमें भी हम पार्लियामेंटमें एक ही दलकी ओरसे एक साथ आये और भव्य तथा महान् मौनभावके

द्वारा अपने देशके कार्य-संचालनमें सहायता करते रहे। किंतु हमारे शारीरिक ढांचों और नैतिक गठनोंमें जो अंतर था उससे अधिक अंतर भला मनुष्योंमें क्या हो सकता है? तुम थे वाइकिंग कुलके लंबे, गोरे, तगड़े वंशज; मैं था वेल्सके पहाड़ोंसे आया हुआ काला, दुवला और ठिगना मनुष्य। तुम बुद्धिमान्, व्यावहारिक, सफल वकील थे; मैं था ललित-कलानुरागी और आलोचक; मैं अपने निजी कामोंके अलावा प्रत्येक चीजके बारेमें कुछ-न-कुछ जानकारी रखता और ऐसे प्रत्येक कामको सफलताके साथ करता जिससे मेरा अपना कोई मतलब न होता।

लिटिलटन

फिर भी हम एक साथ लगे रहे; हमारी रुचियां प्रायः एक ही दिशामें रहा करतीं; हमारी स्नेह-वृत्तियां एक-सी थीं और यहांतक कि हमारे पाप भी हमें एकत्र ही रखते थे।

पर्सिवाल

मैं समझता हूं, हम एक-दूसरेके पूरक थे। हमारी रुचियां वहुत अलग-अलग होनेपर भी मिलती-जुलती थीं। हम एक ही पुस्तक पढ़ते, पर तुम उसका सार थोड़ेमें कुशलताके साथ खींच लेते और फिर उसे उठाकर अलग फेंक देते, और तुम्हें संतोष हो जाता कि तुमने मृत व्यक्तियोंको भी अपने लिये उपयोगी वना लिया; और मैं उसके अर्थके मर्मस्थलमें सांपकी भांति घुस जाता और उसमें तबतक सिमटकर बैठा रहता जवतक कि मैं उसके साथ एक न हो जाता और उसके बाद उस आत्मासे परिपूर्ण

होकर और उसकी प्रिय स्मृतिको साथ लेकर मैं फिर बाहर निकल आता जिसने मुझे तबतक आश्रय दे रखा था। जहांतक हमारे पापोंकी बात है, हमें उनकी चर्चा नहीं करनी चाहिये। मृत्युके बाद उनसे हमारा ऐसा परिचय रहा कि हमारा जी थक गया और अब उन्हें याद रखनेकी चाह नहीं रही। पर वहां भी हम-में अंतर था। तुमने पाप किये लोभके साथ, बलके साथ और रसके साथ, पर तुममें हृद्गत भावकी बहुत कमी थी; मैंने भूल की भावाधिक्यके कारण, और अपनी स्मृतियोंकी स्पंदित होनेवाली तीव्रताके कारण मैं अपनेको संभाल न पाया।

लिटिलटन

जरा सुनाओ तो, जबसे हम अलग हुए तबसे तुम्हें कौन-कौनसे लोकने आश्रय दिया।

पर्सिवाल

बल्कि तुम्हीं अपने अनुभव मुझे सुनाओ।

लिटिलटन

सिंहावलोकन करते समय ब्योरेकी बातें धूमिल हो जाती हैं और उन्हें नहीं कहा जा सकता। मृत्यु-जैसे कष्ट देनेवाले कुछ अवसर आये, और प्रत्येकका अपना-अपना भौतिक परिपार्श्व था। मैं उन्हें भूल जाना चाहता हूं, पर भूल नहीं पाता। उनमेंसे कुछ अवसरोंपर विचित्र ढंगसे यूनानी और कैथोलिक ग्रंथोंमें वर्णित नरकोंकी याद हो आयी थी, पर सादृश्य 'प्रकार' में था, ब्योरेमें

नहीं। मैं यमलोकके राक्षसों (Harpies) का शिकार हुआ, मेरा पीछा किया गया, मैं चीरा-फाड़ा गया और निगला गया; मैंने उन मनुष्योंकी यातनाओंका अनुभव किया जिन्हें मैंने जान-बूझकर दी जानेवाली निर्दय यातनाका भागी बननेके लिये अपने जेलोंमें भेजा था, जिनका मैंने धन या मान छीन लिया था। मेरे जीवनकी सफलताएं फिर सामने आयीं और मैं उनकी स्वार्थपरता, रूक्षता और कठोरतासे ऊब उठा। धन मेरे हाथोंमें जलता लोहा हो गया, विलास लपलपाती आग बनकर मेरे शरीरसे लिपट गया। मुझे ऐसे-ऐसे प्रदेशोंमें रहना पड़ा जहां प्रेम अज्ञात था और जहां-के निवासियोंका अंतस्तल लोहेके जैसा सख्त और मजबूत था, सहाराके रेगिस्तान जैसा शुष्क और निरानंद था। पर्सिवाल, हे पर्सिवाल, मैं जब फिर पृथ्वीपर जाऊंगा, मैं प्रेमको पहचानूंगा और दयाके साथ बर्ताव करूंगा।

पर्सिवाल

क्या तुम्हें विरामका समय नहीं मिला? क्या तुम सुखके किसी प्रदेशमें नहीं गये?

लिटिलटन

मेरी समझमें, वह अभी आगे आनेवाला है।

पर्सिवाल

मुझे भी तुम्हारे जैसे अनुभव हुए यद्यपि उनका स्वरूप और प्रकार कुछ भिन्न था। मैं अपने जीवनकी बार-बारकी स्वार्थ-

परता और दुर्बलतासे ऊब गया हूं, मैंने अपने अंतःकरणमें उन लोगोंके कष्टोंका अनुभव किया है जिन्हें मैंने चोट पहुंचायी थी। अब मैं समझ सकता हूं कि ईसाई लोग नरकको शाश्वत क्यों मानते हैं; यह अंतरमें उन यंत्रणाओंकी नैतिक अनंतताकी स्मृति है। किंतु मुझे छुटकारा भी मिला। मैं स्वर्गमें रहा हूं, मैं अमर पुष्पोंके बागोंमें घूमा हूं। और अपने उन सुखदायी अनुभवोंके द्वारा मैंने अपने प्रेमकी शक्ति और गुणको गभीर बनाया है, अपने भावोंकी तीक्ष्णताको तीव्र बनाया ह, अपनी रुचि और बुद्धिको परिमार्जित और विशुद्ध किया है।

लिटिलटन

यह कौन-सा जगत् है, जहां हम अभी मिल रहे हैं?

पर्सिवाल

यह सहयोगियोंका स्वर्ग है।

मूल्य ।।।)